श्रीगुरु सारिखा

गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा संगीतबद्ध

ध्रुवपद

श्रीगुरु सारिखा असतां पाठीराखा।
इतरांचा लेखा कोण करी॥

श्रीगुरु जैसे परम संरक्षक के होते
मैं किसी और से सहायता क्यों चाहूँ?

पद १

राजयाची कान्ता काय भीक मागे।
मनाचिया जोगे सिद्धी पावे॥

क्या राजा की पत्नी कभी भीख माँगेगी,
जबकि उसकी समस्त मनोकामनाएँ पहले ही पूरी हो चुकी हों?

पद २

कल्पतरू तळवटीं जो कोणी बैसला।
काय उणें त्याला सांगिजो जी॥

कल्पतरु के नीचे बैठे हुए व्यक्ति को
क्या किसी भी चीज़ की कमी हो सकती है?

पद ३

ज्ञानदेव म्हणे तरलों तरलों।
साचें उद्धरलो गुरुकृपें॥

ज्ञानदेव कहते हैं, मैं भवसागर से तर गया हूँ।
मेरे श्रीगुरुदेव की कृपा से सचमुच मेरा उद्धार हो गया है।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।